सत्यान्वेषी ब्योमकेश बक्शी

लोहे के बिस्कुट

शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय

अनुवादक

जयदीप शेखर

PREVIEW

लोहे के बिस्कुट

सत्यान्वेषी ब्योमकेश बक्शी की बँगला जासूसी कहानी
'लोहा'र बिस्कुट' (1969) का हिन्दी अनुवाद

लेखक
शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय

अनुवादक
जयदीप शेखर

JAGPRABHA.IN

JAGPRABHA.IN

Cover Photo Credit:
oikotaantees.in
(Image printed on Tshirt. Copied and converted to Negative for Cover.)

-: eBook :-

LOHE KE BISKUT

(The Iron Biscuits)

Hindi translation of the Bengali detective story ‘Loha’r Biskut’ (1969) from the ‘Byomkesh Bakshi’ series.

Original author: Sharadindu Banyopadhyay (1899-1970)

Hindi translation: Jaydeep Das

(Pen Name: Jaydeep Shekhar)

Copyright © 2023: Translator

Available at: jagprabha.in

***

शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय

(1899 - 1970)

बँगला साहित्य में जासूसी कहानियों को सम्मानजनक स्थान दिलाने वाले लेखक। इनके द्वारा गढ़े गये चरित्र ब्योमकेश बक्शी के नाम से शायद ही कोई अपरिचित हो। ब्योमकेश खुद को 'जासूस' नहीं, 'सत्यान्वेषी' कहते थे। वे अपनी आँखों से महीन पर्यवेक्षण तथा दिमाग से गहन विश्लेषण करके जटिल से जटिल मामलों की तह तक पहुँच जाते थे।

शरदिन्दु बन्द्योपाध्याय ने यूँ तो बँगला में काफी कुछ लिखा है, कई किरदार गढ़े हैं, वे फिल्मों में पटकथा लेखक भी रहे हैं, पर वे ब्योमकेश बक्शी के प्रणेता के रूप में ही जाने जाते हैं। उन्होंने ब्योमकेश बक्शी की कुल 32 कहानियाँ (33वीं कहानी अधूरी है) लिखी हैं, जिनमें से ज्यादातर पर फिल्में या टीवी धारावाहिक बन चुके हैं। 1932 से 1936 तक उन्होंने ब्योमकेश की 10 कहानियाँ लिखीं, इसके बाद वे फिल्मों में व्यस्त रहे, फिर 1951 से 1970 के बीच बाकी कहानियाँ लिखीं।

***

लोहे के बिस्कुट

कमलबाबू बोले, “मैं मुहल्ले में ही रहता हूँ, हिन्दुस्तान पार्क के कोने में। आपको बहुत बार देखा है, परिचय करने की भी इच्छा हुई है, लेकिन हिम्मत नहीं पड़ी। आज कुछ बताना है, इसलिए सोचा, इसी बहाने परिचय कर लिया जाय। मेरे जीवन में एक छोटी-सी समस्या आ खड़ी हुई है– ”

“समस्या!” ब्योमकेश सिगरेट की डिब्बी बढ़ाते हुए बोले, “बताईए, बताईए, बहुत दिनों से इस चीज से वंचित हूँ।”

गर्मियों के एक रविवार की सुबह ब्योमकेश के केयातला वाले घर में बैठकर बातचीत हो रही थी। कमलबाबू के चेहरे की बनावट लड्डूगोपाल-जैसी थी, लेकिन हाव-भाव तेज-तर्रार एवं बुद्धिमान व्यक्ति का था। उन्होंने हँसकर एक सिगरेट लेकर सुलगाया, फिर अपनी कहानी शुरू की, “मेरा नाम कमलकृष्ण दास है, पास में ही भारत केन्द्रीय बैंक की शाखा है, मैं वहीं का कैशियर हूँ। लगभग डेढ़ साल पहले पुरूलिया से बदली होकर यहाँ आया हूँ।

“कोलकाता आते ही मुश्किल में पड़ गया; कहीं डेरा नहीं मिल रहा था। अन्त में, एक व्यक्ति ने निचली मंजिल का अपना एक कमरा खाली किया। फैमिली लाना नहीं हो पाया, पत्नी और बेटी को पुरूलिया में छोड़कर अकेले उस डेरे में आ गया।

“मकान-मालिक का नाम अक्षय मण्डल है। मकान दुमंजिला है; निचली मंजिल में दो कमरे हैं, ऊपर दो; आने-जाने के रास्ते अलग हैं। अक्षय मण्डल दुमंजिले पर अकेले रहते थे, लेकिन उनके पास लोगों का आना-जाना था। व्यवहार अच्छा था उनका, लेकिन वे क्या काम करते थे– यह समझ नहीं पाया। बीच-बीच में मेरे कमरे में आकर गपशप करते थे, लेकिन मुझे कभी दुमंजिले पर नहीं बुलाते थे। पड़ोसियों के साथ भी उनका सम्पर्क नहीं था। हमारे बैंक में उनका एक चालू खाता था।

“खैर, इसी तरह तीन महीने बीते। एक छुट्टी के दिन मेरे ऑफिस के एक सहकर्मी के घर मैं रात के खाने पर आमंत्रित था। लौटने में देर हो गयी। डेरे पर आकर देखा, अक्षय मण्डल दुमंजिले से उतरकर सीढ़ियों के दरवाजे पर ताला

लगा रहे थे, उनके पैरों के दोनों तरफ दो सूटकेस थे। पूछा, 'यह क्या, इतनी रात में कहाँ चल दिये?'

"मुझे देखकर अक्षय मण्डल अकचका-से गये; फिर दोनों हाथों में सूटकेस लेकर मेरे नजदीक आये और गम्भीर स्वर में बोले, 'कमलबाबू, मुझे अचानक बाहर जाना पड़ रहा है। कब लौटूँगा, कुछ पता नहीं।'

"देखा, उनकी दोनों आँखें लाल हो रही थीं। पूछा, 'बात क्या है, कहाँ जा रहे हैं?'

"उनके चेहरे पर क्षीण मुस्कान उभरी। वे बोले, 'बहुत दूर। अच्छा, चलता हूँ।'

"मैं अवाक् खड़ा रहा। वे कुछ कदम चलकर ठिठके, फिर वापस आकर बोले, 'कमलबाबू, आप सज्जन व्यक्ति हैं, बैंक में नौकरी करते हैं; आपको एक बात बताकर जाता हूँ। सात दिनों के अन्दर अगर मैं लौटकर नहीं आऊँ, तो मेरा पूरा मकान दखल कर लीजिएगा। आपके बैंक में मेरा जो अकाउण्ट है, उसमें डेढ़ सौ रुपया महीना करके किराया जमा कर दिया कीजिएगा। —अच्छा।'

"अक्षय मण्डल चले गये। मैं स्तम्भित कुछ पल खड़ा रहा। इसके बाद विस्मय का भाव जब कटा, तब मेरा ध्यान गया कि अक्षय मण्डल अपने दरवाजे की चाबी मुझे नहीं दे गये हैं।

"जो भी हो, पूरा मकान पा जाने की आशा में मेरा मन उत्फुल्ल हो उठा। लगा कि अक्षय मण्डल अगस्त्य-यात्रा पर निकल गये हैं, अब जल्दी नहीं लौटने वाले।

"अगले दिन सुबह पत्नी को चिट्ठी लिख दी— 'सामान समेटकर तैयार रहो, डेरा मिलने की सम्भावना है।'

"आशा में दो दिन बीत गये। तीसरे दिन से दुर्गन्ध आनी शुरू हुई। तेज दुर्गन्ध, सड़ने-गलने की। गर्मियों में मांस-मछली सड़ने पर जैसी दुर्गन्ध निकलती है, वैसी ही दुर्गन्ध आ रही थी।

"सन्देह हुआ, पुलिस को खबर दिया। पुलिस ताला तोड़कर ऊपर गयी। मैं भी साथ-साथ गया। जाकर देखा— वीभत्स काण्ड। कमरे के फर्श पर एक लाश हाथ-पाँव फैलाये पड़ी हुई थी, उसके माथे पर एक छेद था। जिस रात मैं निमंत्रण खाने गया था, उसी समय अक्षय मण्डल ने इस व्यक्ति को गोली मारी और इसके बाद कीमती सामान और रुपये-पैसे सूटकेस में भरकर निकल गया।

“देखते-देखते मकान पुलिस छावनी में बदल गया। लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। दारोगाबाबू ने मेरा बयान दर्ज किया। इसके बाद घर की तलाशी शुरू हुई। तटस्थ गवाह के रूप में पड़ोस के एक सज्जन को और मुझे रखा गया।

“तलाशी में खास कुछ नहीं मिला। केवल एक दराज में लोहे के रैपर-जैसी कुछ चीजें मिले। सिगरेट के पैकेट के अन्दर चमकीले कागज को जिस तरीके से मोड़कर उसके अन्दर सिगरेट रखी जाती हैं, इन रैपर को काफी हद तक उसी तरीके से मोड़कर आयताकार डिब्बी बना दी गयी थीं। बहुत सम्भवतः ये लोहे की ही बनी थीं, लेकिन अन्दर से खाली थीं।

“खैर, जाँच-पड़ताल के बाद उस दिन के लिए पुलिस चली गयी। मेरे मन में लेकिन खटका लगा रहा। तीन-चार दिनों बाद थाना गया। वहाँ जाकर जानकारी मिली कि मृतक का परिचय मिल गया था। उँगली की छाप तथा अन्यान्य शारीरिक जानकारियों से पता चला था कि मृतक का नाम हरिहर सिंह था; दागी आसामी था, मादक द्रव्यों एवं सोना-चाँदी की तस्करी करता था। अक्षय मण्डल के पास किस कारण से उसका आना-जाना था– यह पता नहीं चल पाया था। अक्षय मण्डल के नाम से हुलिया जारी हो चुका था, लेकिन वह अब भी गिरफ्त से बाहर था, कपूर के समान लापता हो गया था वह।

“थाने से आने से पहले डरते-डरते पूछा, ‘क्या मैं पूरे मकान को दखल में ले सकता हूँ?’

“दारोगाबाबू बोले, ‘खुशी से। आसामी जब फरार होने से पहले अपना मकान आपकी हिफाजत में रख गया है, तो आप उसमें रहिएगा ही; लेकिन एक बात है– यदि आसामी की भनक मिलती है, तो तुरन्त थाने में खबर दीजिएगा।’

“इसके बाद से लगभग एक साल बहुत आराम से बीता। पत्नी और बेटी को ले आया था, सारे मकान को दखल में लेकर हाथ-पाँव फैलाकर रहना हो रहा है। मकान का किराया महीने-महीने अक्षय मण्डल के खाते में जमा कर देता हूँ। उनकी टेबल-कुर्सियों का व्यवहार बेशक करता हूँ, लेकिन उनकी आलमारी, बक्से, कप-बोर्ड को हाथ नहीं लगाता, पुलिस की तलाशी के बाद से वे चीजें जैसी थीं, वैसी ही रखी हैं।

“अचानक दो महीनों पहले एक फसाद खड़ा हो गया। सुबह नीचे के कमरे में अखबार पढ़ रहा था कि एक अपरिचित व्यक्ति आये, साथ में एक महिला भी थीं।